171
656 P
H
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

आह्वानांक Call No.

अवाप्ति सं० Acc. No. 656

1253
10/21

891.431
R183R

राष्ट्रीय-गीत

प्रकाशक

बेनीमाधो गुप्त

१० लोकनाथ इलाहाबाद

१९३०

द्वितीयावृत्ति]

[मूल्य चार पैसा

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 656
Date 16.12.71
GOVT. OF INDIA

❀ वन्देमातरम् ❀

राष्ट्रीय गीत

१—वन्देमातरम्

सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम्,
शस्य श्यामलाम् मातरम् ॥ वन्दे ।
शुभ्रज्योत्स्नाँ-पुलकित यामिनीम्,
फुल्ल-कुसुमित-द्रुमदल शोभिनीम्,
सुहासिनीम् सुमधुर भाषणीम्,
सुखदाम् वरदाम् मातरम् ॥ वन्दे ।
त्रिंश कोटि-कंठ-कलकल-निनाद-कराले,
द्वित्रिंश कोटि भुजैर्धृत खरकर वाले,
के बोले माँ! तुम अबले,
बहुबल धारणीम्, नमामि तारिणीम्,
रिपुदल वारिणीम् मातरम् ॥ वन्दे ।
श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम्,
धरणीम् भरणीम् मातरम् ॥ वन्दे ।

२—राष्ट्रीय झण्डा

झण्डा ऊंचा रहे हमारा।

विजयी विश्व तिरङ्गा प्यारा,
झण्डा ऊंचा रहे हमारा,
सदा शक्ति बरसाने वाला,
प्रेम सुधा सरसाने वाला,
वीरों को हर्षाने वाला,
मातृ-भूमि का तन मन सारा,
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥

स्वतन्त्रता के भीषण रण में,
लख कर बढ़े जोश क्षण क्षण में,
काँपे शत्रु देख कर मन में,
मिट जावे भय सङ्कट सारा,
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥

इस झण्डे के नीचे निर्भय,
लें स्वराज्य यह अविचल निश्चय,
बोलो भारत माता की जय,
स्वतन्त्रता हो ध्येय हमारा,
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥

आवो प्यारे वीरो आवो,
देश धर्म पर बलि बलि जाओ,
एक साथ सब मिल कर गावो,
प्यारा भारत देश हमारा,
झण्डा ऊंचा रहे हमारा ॥

इसकी शान न जाने पावे,
चाहे जान भले ही जावे,
विश्व विजय करके दिखलावे,
तब होवे प्रण पूर्ण हमारा,
झण्डा ऊंचा रहे हमारा ॥

३—रफ्तार

तबदील गवर्नमेण्ट की रफ़ार न होगी।
गर क़ौम असहयोग पै तैयार न होगी ॥
बन जांयगे हर शहर में जलियान वाले बाग़।
इस मुल्क से गर दूर यह सरकार न होगी ॥
दुश्मन को असहयोग से हम ज़ेर करेंगे।
इन हाथों में बन्दूक औ तलवार न होगी ॥
यह जेलख़ाने टूट कर अब और बनेंगे।
इन में तमाम क़ौम गिरफ़ार न होगी ॥

वह कौन असीरे वतन होगा भला जिस पर।
हँस हँस के फ़िदा जेल की दीवार न होगी॥
सौदाई हैं हम को दो लोहे की बेड़ियाँ।
सोने के ज़ेवरों में यह झन्कार न होगी॥
जब तक कि इसे खून से सींचेंगे नहीं हम।
खेती वतन की दोस्तो तैयार न होगी॥
हम देसी हुकूमत को मिटा देंगे मुज़तरिब।
ग़म में जो हमारे ग़मख़्वार न होगी

४—स्वतन्त्र भारत

अहाहा मोहन के मुख से निकला स्वतँत्र भारत स्वतँत्र भारत।
सचेत हो कर सुना सभी ने स्वतन्त्र भारत स्वतन्त्र भारत॥
शरीर में नीर में गगन में पवन में तन मे हर एक मन में।
वही मधुर ध्वनि समा रही है स्वतन्त्र भारत स्वतन्त्र भारत॥
हर एक घर में मची हुई है स्वतन्त्रता की विचित्र हलचल
हर एक बच्चा पुकारता है स्वतन्त्र भारत स्वतन्त्र भारत॥
रहा हमेशा स्वतन्त्र भारत रहेगा फिर भी स्वतन्त्र भारत।
दिखाई देता है स्वप्न में भी स्वतन्त्र भारत स्वतन्त्र भारत॥
बना के कुटियाँ स्वतन्त्रता की सपूत जेलों में रम रहे हैं।
निकल के देखेंगे यह तपस्वी स्वतन्त्र भारत स्वतन्त्र भारत॥
कुमारी हिमगिरि अटक कटक में बजेगा डंका स्वतन्त्रता का।
कहेंगे तेंतिस करोड़ मिल कर स्वतन्त्र भारत स्वतन्त्र भारत॥

५—नौजवानों की तमन्ना

मुर्दा भारत को जिला जायेंगे मरते मरते।
नाम ज़िन्दों में लिखा जायेंगे मरते मरते॥
तुम को कमज़ोर समझ बैठे हमारे दुश्मन।
उनका अभिमान मिटा जायेंगे मरते मरते॥
ज़ुल्म करती है हिन्द पै नौकरशाही।
उसकी बदचाल मिटा जायेंगे मरते मरते॥
दिलों पर दुश्मनों के अपनी ज़बाँ मर्दी से।
हिन्द का सिक्का बिठा जायेंगे मरते मरते॥
जेलखाने की भी खुश होके बढ़ायें रौनक़।
एक क्या लाखों बना जायेंगे मरते मरते॥
मातृ-भूमी के लिये जान निछावर कर दें।
सबक़ भारत को पढ़ा जायेंगे मरते मरते॥
हैं तो नाचीज़ मगर इतनी जुरत रखते हैं।
हिन्द की बन्दी छुड़ा जायेंगे मरते मरते॥

६—चक्की चलाना।

जो कुछ पड़ेगी मुझपै मुसीबत उठाऊंगी,
खिदमत करूंगी मुल्क की और जेल जाऊंगी।
बालों में अपने खद्दर के कपड़े बनाऊंगी,
और इन विदेशी लत्तों में मैचिस लगाऊंगी।
चरखा चलाके छीनूंगी उनकी मशीनगन,
डडुए मुल्को कौम को नीचा दिखाऊंगी।
मैं अपनी मुल्की बहिनोंको ले लेकर अपने साथ,
भट्टी पर हर क़लाल के धरना बिठाऊंगी।
जा कर किसी भी जेल में कूदूंगी राम बांस,
बाढ़रिटयर के साथ में चक्की चलाऊंगी।

—:※:—

७—नौजवानो !

भारत के नौजवानो, मैदान जङ्ग आओ।
बन देश प्रेमी अपना, जीवन सफल बनाओ॥
वे वीर त्यागी अपना, कर्तव्य कर रहे हैं।
है राह उनकी सीधी, उस पर क़दम बढ़ाओ॥
है कौन शक्ति ऐसी, जो तुमको रोक लेगी।
गर एक साथ होकर, बल अपना तुम दिखाओ॥
भय त्याग दो अभय बन, स्वातन्त्र जङ्ग छेड़ो।
भू मां को अपनी वीरो, बन्धनसे तुम छुड़ाओ॥

८—क्या हमारे दिल में है

सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना अब ज़ोर कितना बाज़ुए क़ातिल में है॥
रहबरे राहे मुहब्बत रह न जाना राह में।
लज़्ज़ते सहरानवर्दी दूरये मन्ज़िल में है॥
वक्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आसमाँ।
हम अभी से क्या बतायें क्या हमारे दिल में है॥
आज फिर मक़तल में क़ातिल कह रहा है बार बार।
क्या तमन्नाये शहादत भी किसी के दिल में है॥
ऐ शहीदे मुल्क मिल्लत हम तेरे ऊपर निसार
अब तेरी हिम्मत की चर्चा ग़ैर की महफ़िल में है॥
अब न अगले वलवले हैं और न अरमानों की भीड़।
सिर्फ़ मिट जाने की हसरत अब दिले 'बिस्मिल' में है॥

—:※:—

९—वतन के वास्ते

क्या हुआ गर मर गये अपने वतन के वास्ते,
बुलबुलें कुर्बान होती हैं चमन के वास्ते।
तर्स आता है तुम्हारे हाल पै ऐ हिन्दियो,
ग़ैर के मोहताज हो अपने कफ़न के वास्ते।
देखते हैं आज जिसको शाद है, आज़ाद है,

क्या तुम्हीं पैदा हुए रञ्जो मेहन के वास्ते।
दर्द से अब तिलमिलाने का ज़माना हो चुका,
फ़िक्र करनी चाहिये मर्जे कुहन के वास्ते।
हिन्दुओं को चाहिये अब क़स्द काबे का करें,
और फिर मुस्लिम चलें गङ्गो जमन के वास्ते।

१०—गांधी महिमा

गांधी तू आज हिन्द कि एक शान बन गया,
सारी मनुष्य जाति का अभिमान बन गया।
तू सत्य, अहिंसा, दया, निस्वार्थ त्याग से,
इस आज मृत्युलोक में भगवान बन गया।
तेरा प्रभाव सादगी हस्ती को देख कर,
दुश्मन भी बे ज़बान हो हैरान बन गया।
तेरी नसीहतों में वो जादू का असर है,
जिसको लगी हवा तेरी इनसान बन गया
तू दोस्त है हर क़ौम का हरदिल अज़ीज़ है,
सारा जहान तेरा क़दरदान बन गया।
सच तो है तेरी यह कि गई जिस तरफ़ नज़र,
वीरान अगर था तो परिस्तान बन गया।
धिक्कार है अब इन तैंतीस करोड़ को,
तुमसा फ़क़ीर जेल का महमान बन गया।

११—विदेशी वस्त्र बहिष्कार

अब विदेशी माल बाहर से मंगाना छोड़ दो।
खासा मलमल डोरिया तन से लगाना छोड़ दो॥
क्यों प्रतिज्ञा पत्र पर दस्तख़त किये बेफ़ायदा।
अपने ही हाथों से इज़्ज़त का घटाना छोड़ दो॥
सेठ साहूकार हो तुम लक्ष्मी के लाल हो।
कानपुर के वासियो लुटिया डुबाना छोड़ दो॥
गाँधी बाबा का तुमको रहम क्या बिलकुल नहीं।
वोह तो खुद दुखिया हैं उनका दिल दुखाना छोड़ दो॥
वालन्टियर द्वारे तुम्हारे जान तक दे देंयगे।
सोचो दिल में भाइयो आफ़त का ढाना छोड़ दो॥

१२—सैनिक

निकल पड़ो अब बन कर सैनिक भंग करो फर्मानों का।
बिन स्वराज्य के नहीं हटेंगें कौल रहे मर्दानों का॥
अन्धी हो कर पुलिस चलावे डंडे कुछ पर्वाह नहीं
घर का माल लूट ले जावे निकले मुंह से आह नहीं॥
जेल यातना हो निर्दय दल करें गोलियों की बौछार।
ईश्वर का सुमिरण कर वीरो सहते जाओ अत्याचार॥

धनी देश रिपुदास नपुंसक लखें दृश्य बलिदानों का।
बिन स्वराज्य के नहीं हटेंगे क़ील रहे मर्दानों का॥
भगवन भला करें इरविन का बने यशस्वी बृटिश निशान।
होय निहत्थों पर मार्शल ला शहरों गावों के दरम्यान॥
नर नारी बच्चों को गोरे अत्याचारी खूब हने।
भारत के कोने २ में जलियाँ वाला बाग बने।
चिन्ता नहीं बहैं लहराता चहुंदिशि खून जवानों का।
बिन स्वराज्य के नहीं हटेंगे क़ील रहे मर्दानों का।

१३—राष्ट्रपति जवाहरलाल

भारत का डंका आलम में, बजवाया वीर जवाहर ने।
पराधीन बनो स्वाधीन बनो, समझाया वीर जवाहर ने॥१॥
वह लाल जो मोतीलाल का है, है लाल दुलारा भारत का।
सोते भारत को हठ करके, जगवाया वीर जवाहर ने॥२॥
अंगरेज़ों की मृगतृष्णा में, भूले थे भारतवासी सब।
बूटी आज़ादी का मन्तर, सिखलाया वीर जवाहर ने॥३॥
घोंटी है राजनीति उसने, छानी है ख़ाक विदेशों की।
समता स्वतन्त्रता का भाषण, दिखलाया वीर जवाहिर ने॥४॥
पूंजीपति ज़मींदार करते हैं, जुल्म मजूर किसानों पर।
बन साथी दीनों का धीरज, धरवाया वीर जवाहर ने॥५॥

इक रोशन आग धधकती है, आज़ादी की उसके दिल में।
जिससे युवकों का मुर्दा दिल, चमकाया वीर जवाहर ने ॥६॥
आदर्श-चरित से यह अपने, युवकों का है सम्राट् बना।
आज़ादी का ऊंचा झंडा, फहराया वीर जवाहर ने ॥७॥
बिजली है वाणी में उसकी, जादू है आँखों में उसकी।
देखा जिसको एक पल भर में, अपनाया वीर जवाहर ने ॥८॥

१४—हिन्द में क़ानून भङ्ग

क़ानून भङ्ग का हिन्द में, अब बोल बाला हो गया।
देख ले ऐ दुश्मने! दिल तेरा काला हो गया॥
नाटक हमारा है बड़ा, और वक्त है पर्दा खुले।
हिरनाकुशो प्रहलाद का, अब तो हवाला हो गया॥
क़ानून तेरा अब कोई हम मान सकते हैं नहीं।
नमक के क़ानून का भी, अब दिवाला होगया।
इसके बदले में हमें तुम, अब कहाँ हो भेजते॥
जेलख़ाना भी हमें, मस्जिद शिवाला हो गया।
जाके पहुंचे जेल में, औ देश-भक्तों से मिलें॥
देख कर दुश्मन भी कह दे, तह श्रोबाला हो गया।
रोक सकता तू नहीं ज़ालिम मेरे गाँधी की शान।
आसमाँ भी अब उन्हें, मकड़ी का जाला हो गया॥

१५—हमारा वतन

हमारा हक़ है हमारी दौलत किसी के बाबा का ज़र नहीं है।
है मुल्क भारत वतन हमारा किसी के खाला का घर नहीं है।
हुकूक अपना ही चाहते हैं न कुछ किसी का बिगाड़ते हैं।
तुझे तो ऐ खुदगरज़ किसी की भलाई मद्दे नज़र नहीं है॥
हमारी नस नस का खून तू ने बड़ी सफ़ाई के साथ चूसा।
है कौन सी तेरी पालसी जिस में घोला ज़हर नहीं है॥
जो बे गुनाहों को है सताता कभी न वह सुख से बैठ पाता।
बड़े बड़े मिट गये सितमगर क्या तुमको इसकी ख़बर नहीं है॥
गज़ब है हम बेकसों की आहें ज़मीन औ आसमाँ हिला दें॥
ग़लत हैं समझे 'कमल' जो समझे कि आह में कुछ असर नहीं है।

१६—बुलबुले हिन्द

ऐ जवानो वक़्त है मिट जाओ क़ौमी आन पर।
देखना धब्बा न लग जाये वतन की शान पर॥
आसमाने हिन्दुस्तां पर बिजलियां टूटा करें।
हैफ़ गर फिर भी न जूं रेंगे तुम्हारे कान पर॥
वह ज़माना भूल जावोगी चमन ख़तरे में है।
बुलबुलो क्या देखती हो खेल जावो जान पर॥

कसरे आज़ादी की राहों का पता लग जायगा।
गर निगाह डाला ज़रा तुम चीन औ जापान पर॥
अब्र कज रफ़्तार चक्कर में न आजाये कहीं।
डालता है हाथ अर्जुन भीम की सन्तान पर॥

१७—स्वतन्त्रता

तुमको मेरा प्रणाम है,
प्यारी स्वतन्त्रता।
तेरे लिये यह प्राण है,
प्यारी स्वतन्त्रता।
धन धाम क्या शरीर भी,
यदि काम आवे तो।
तेरे लिये बलिदान है,
प्यारी स्वतन्त्रता।

(मुद्रक—डा० मोजदयाल गुप्त आनन्द प्रेस, फ़तेहपुर)